प्रादर्श प्रश्न पत्र 2012
विषय – इतिहास
कक्षा – बारहवीं

समय– 3 घंटे **पूर्णांक– 100**
Time- 3 Hours **Maximum Mark – 100**

निर्देश–

i. सभी प्रश्न अनिवार्य है।

ii. प्रश्न पत्र में दिये गये निर्देश सावधानी पूर्वक पढ़कर उत्तर लिखिए।

iii. प्रश्न 1 से 5 तक वस्तुनिष्ठ प्रश्न है जिनके अन्तर्गत रिक्त स्थानों की पूर्ति, सत्य/असत्य, सही जोड़ी बनाना, एक वाक्य में उत्तर तथा सही विकल्प का चयन करना है। प्रत्येक प्रश्न 5 अंक का है। 1x5= 5x5 = 25 अंक

iv. प्रश्न क्रमांक 6 से 21 तक में आन्तरिक विकल्प दिये गये है।

v. प्रश्न क्रमांक 6 से 12 तक प्रत्येक प्रश्न के लिए 4 अंक एवं प्रश्नों के उत्तर लगभग 75 शब्दों में लिखना है।

vi. प्रश्न क्रमांक 13 से 19 तक प्रत्येक प्रश्न के लिए 5 अंक एवं प्रश्नों के उत्तर लगभग 120 शब्दों में लिखना है।

vii. प्रश्न क्रमांक 20 तथा 21 में प्रत्येक प्रश्न पर 6 अंक एवं प्रश्नों के उत्तर लगभग 150 शब्दों में लिखना है।

Instructions –

i. All question are compulsory.

ii. Please the instructions carefully before writing the answer.

iii. Q. No. 1 to 5 are objective type which contain fill up the Blank, True/False, match the column, one sentence answer and choose the correct answers. Each question is allotted 5 marks. 1x1 = 5x5 =25 Marks.

iv. Internal options are given in Q. No. 6 to 21.

v. Q. No. 6 to 12 carry 4 marks each and answer should be given in about 75 words.

vi. Q. No. 13 to 19 carry 5 marks each and answer should be given in about 120 words.

Q. No. 20 and 21 carry 6 marks each and answer should be given in about 150 words.

वस्तुनिष्ठ प्रश्न
Objective Type Questions

प्रश्न 1. सही विकल्प का चयन कीजिए।

(अ) पहिए का आविष्कार हुआ था।

(i) पुरापाषाण काल में (ii) मध्यपाषाण काल में

(iii) नवपाषाण काल में (iv) इनमें से कोई नहीं

(ब) खजुराहों किन राजाओं की राजधानी थी –

(i) चन्देल (ii) परमार

(iii) चौहान (iv) गुर्जर प्रतिहार

(स) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रथम अध्यक्ष थे –

(i) सुरेन्द्र नाथ बनर्जी (ii) दादा भाई नौरोजी

(iii) व्योमेशचन्द बनर्जी (iv) ए.ओ. ह्यूम

(द) अष्टांग मार्ग किस धर्म से संबंधित है –

(i) बौद्ध धर्म (ii) जैन धर्म

(iii) वैष्णव धर्म (iv) शैव धर्म

(इ) मध्यप्रदेश का गठन हुआ –

(i) 1 नवम्बर 1980 (ii) 1 नवम्बर 1956

(iii) 1 नवम्बर 1960 (iv) 1 नवम्बर 1948

Choose the correct option in the following.

(a) The wheel was discovered in -

(i) Pre-Stone Age (ii) Mid Stone Age

(iii) New Stone Age (iv) None of these.

(b) Khajuraho was the capital of -

(i) Chandel's (ii) Parmar's

(iii) Chauhan's (iv) Gurjar Pratihar's

(c) First president of Indian National Congress was -

(i) Surendra Nath Banarjee (ii) Dada Bhai Nauraji

(iii) Vyomesh Chandra Banarjee (iv) A.O. Hume

(d) Ashtang Marg (Eight Path) is related to which religion -

(i) Buddhism (ii) Jainism

(iii) Vaishnavism (iv) Shaivism

(e) Madhya Pradesh was formed on -

(i) 1st November 1980 (ii) 1st November 1956

(iii) 1st November 1960 (iv) 1st Novembr 1948

प्रश्न 2. सही जोड़ियां बनाइये–

	अ	–	ब
(अ)	चन्द बरदाई	–	मुहम्मद तुगलक
(ब)	इब्नबतूता	–	सन् 1905
(स)	अभिलेख	–	सन् 1906
(द)	बंगाल विभाजन	–	पृथ्वीराज रासो
(इ)	मुस्लिम लीग	–	पुरातात्विक स्त्रोत (साधन)

Match the following.

	A	-	B
(a)	Chand Bardai	-	Mohammad Tughlak
(b)	Ibnabatoota	-	1905
(c)	Inseriptions	-	1906
(d)	Division of Bengal	-	Prithviraj Raso
(e)	Muslim League	-	Archeological source.

प्रश्न 3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

(i) सिन्धुवासियों की लिपि.....थी।

(ii) कैलाशनाथ मंदिर का निर्माण राष्ट्र कूट शासक.....ने करवाया था।

(iii) सांची स्तूप का निर्माण.....ने करवाया था।

(iv) झंडा सत्याग्रह आंदोलन.....नगर में हुआ।

(v) पुरन्दर की संधि.....के मध्य हुई थी।

Fill in the blanks.

(i) The Script of Indus People was.....

(ii) Kailash Nath temple was built by the Rashtrakut King.

(iii) Sanchi Stoop was built by.....

(iv) Jhanda Satyagrah Movement was held in.....city.

(v) The Treaty of Purandar was done between.....

प्रश्न 4. निम्नलिखित वक्यों में सत्य एवं असत्य बताइये –

(i) ''केसरी'' नामक समाचार पत्र का प्रकाशन श्रीमती एनबेसेन्ट द्वारा किया गया था।

(ii) भीमबेटका की गुफाएं ग्वालियर जिले में स्थित है।

(iii) हड़प्पा के निवासी मुख्य रूप से मातृदेवी के उपासक थे।

(iv) कन्दरिया महादेव का मंदिर खजुराहों में स्थित है।

(v) गुर्जर प्रतिहारवंश का सबसे शक्तिशाली शासक मिहिर भोज था।

Mark true or false.

(i) Smt. Annibesent Published the News Paper "Kesari".

(ii) Bhimbetka rock shelters site is located in Gwalior district.

(iii) Harappans basically worshiped mother godess.

(iv) Kandariya Mahadev temple was located in Khajuraho.

(v) The most powerful Ruler of Gurjar Pratihar dynesty was Mihir Bhoj.

प्रश्न 5. एक वाक्य में उत्तर लिखिए।

1. विजय नगर राज्य का संस्थापक कौन था?

2. सिन्धु सभ्यता के निवासी किस धातु से अपरिचित थे?

3. अकबर का संरक्षक कौन था?

4. तराइन का द्वितीय युद्ध कब हुआ था?

5. दिल्ली सल्तनत की प्रथम महिला शासिका कौन थी?

Write the Answer of the following questions in a sentence or in a word.

1. Who was the founder of Vijay Nagar dynesty?
2. Indus people ware unknown with which metal?
3. Who was the guardian of Akbar?
4. When was the II battle of Tarain fought?
5. Who was the first lady emperor of Delhi Sultant?

प्रश्न 6. ऋग्वैदिक काल में स्त्रियों की दशा कैसी थी?

How was the condition of women in Rigvaidic Period?

अथवा

Or

सिन्धु सभ्यता की देन क्या थी? बताइये।

Mention the contributin of Indus valley civilizaton.

प्रश्न 7. ''हर्ष में अशोक एवं समुद्र गुप्त दोनों के गुणा का समावेश था।'' समझाइये।

"Harshvardhan had the qualities of Ashok and Samudragupt both". Explain.

अथवा

Or

मौर्यकालीन स्थानीय प्रशासनिक व्यवस्था को समझाइये।

Explian the local administrative system of Mauryas.

प्रश्न 8. गुप्तकाल में हुई वैज्ञानिक प्रगति का उल्लेख कीजिए।

Mention the progress of science by Gupt Period.

अथवा

Or

अशोक के धर्म प्रचार के साधन लिखिए।

Mention the ways of spreading religion of Ashok.

प्रश्न 9. मंदिर स्थापत्य कला के क्षेत्र में पल्लव नरेशों का योगदान बताइये।

Mention the contribution of Pallav rulers in temple architecture.

अथवा

Or

चोल शासकों का स्थानीय स्वशासन समझाइये।

Explain the local administration of Chol rulers.

प्रश्न 10. हुमायूं की असफलता के कोई चार कारण लिखिए।

Write any four causes for failure of Humayu.

अथवा

Or

दीन–ए–इलाही के विषय में आप क्या जानते है?

What do you know about Din-E-Ilahi?

प्रश्न 11. शिवाजी की ''अष्ट प्रधान'' व्यवस्था समझाइए।

Explain the "Ashth Pradhan" system of Shivaji.

अथवा

Or

चौथ और सरदेशमुखी के विषय में आप क्या जानते है। समझाइए।

What do you know about "Chauth" and "Sardeshmukhi"? Explain.

प्रश्न 12. इलाहाबाद की संधि की शर्तों का उल्लेख करते हुए उसके महत्व का समझाइए।

Mention the terms & condition of Treaty of Allahabad. Explain its importance.

अथवा

Or

भारत में अंग्रेज–फ्रांसीसी संघर्ष में फ्रांसीसियों की असफलता के कारण लिखिए।

Write any four causes for failure of French in Anglo-French confliet in India.

प्रश्न 13. प्राचीन भारतीय इतिहास की जानकारी के पुरातात्विक साधनों का उल्लेख कीजिए।

Explain the archological sources for knowing the Ancient Indian History.

अथवा

Or

प्राचीन पाषाण युग और नवपाषाण युग के मध्य अन्तर बताइए।

Describe the differenses between Paleolithic and Neolithic age.

प्रश्न 14. अलाउद्दीन खिलजी की ''बाजार नियंत्रण नीति'' समझाइए।

Explain the "Market Controlling System" of Allauddin Khilzi.

अथवा

Or

भक्ति आंदोलन के प्रभावों की विवेचना कीजिए।

Discuss the inffuences of Bhakti Movement.

प्रश्न 15. अकबर की राजपूत नीति स्पष्ट करते हुए उसके परिणाम लिखिए।

Mention the Rajpoot Policy of Akbar and write its results.

अथवा

Or

''शाहजहां का काल मुगल काल का स्वर्ण युग था'' विवेचना कीजिए।

"The period of Shahjahan was Golden age of Moughals". Discuss.

प्रश्न 16. मराठों के उत्कर्ष के कोई पांच कारणों का वर्णन कीजिए।

Describe any five causes of rise of Marathas.

अथवा

Or

मराठा राष्ट्र निर्माता के रूप में शिवाजी का मूल्यांकन कीजिए।

Evaluate Shivaji as Maratha's Nation builder.

प्रश्न 17. राजा राममोहन राय महान समाज सुधारक थे स्पष्ट कीजिए।

"Raja Ram Mohan Roy was great social reformer. Explain.

अथवा

Or

1857 ई. की क्रांति का आरंभ किन सैनिक कारणों से हुआ? लिखिए।

Which militant causes inicited the revolt of 1857?

प्रश्न 18. भारतीय पुनर्जागरण के भारतीय समाज पर पड़ने वाले प्रभावों का वर्णन कीजिए।

Describe the influencees of Indian Renaissance on Indian Society.

अथवा

Or

भारत में अंग्रेजी शासन के सामाजिक एवं धार्मिक प्रभावों का वर्णन कीजिए।

Describe the social and religious efects of British Rule in India.

प्रश्न 19. 1857 ई. की क्रांति में मध्यप्रदेश के योगदान का वर्णन कीजिए।

Describe the contribution of Madhya Pradesh in revolt of 1857.

अथवा

Or

मध्यप्रदेश में प्राप्त प्राचीन स्मारकों का उल्लेख कीजिए।

Describe Ancient Monuments of Madhya Pradesh.

प्रश्न 20. भारत में पुर्तगालियों के पतन के किन्हीं छः कारणों का वर्णन कीजिए।

Describe any six causes for decline of Portuguese in India

अथवा

Or

बक्सर के युद्ध के कारण एवं महत्व को विस्तार से समझाइए।

Descirbe the reasons and importance of battle of Buxor.

प्रश्न 21. भारतीयों में राष्ट्रीय चेतना के उदय के प्रमुख छः कारणों का वर्णन कीजिए।

Describe any six causes of National consciousness in India.

अथवा

Or

भारत छोड़ो आन्दोलन के कारण एवं परिणामों की विवेचना कीजिए।

Describe the causes and results of Quit India Movment.

– – – – – –

आदर्श उत्तर

इतिहास
History

वस्तुनिष्ठ प्रश्न के उत्तर

उत्तर 1. सही उत्तर –

(अ) (iii) नवपाषाण काल।

(ब) (i) चन्देल

(स) (iii) व्योमेशचन्द्र बनर्जी

(द) (i) बौद्ध धर्म

(इ) (ii) 1 नवम्बर 1956

5 सही हल करने पर 5 अंक प्राप्त होंगे 1+1+1+1+1=5

उत्तर 2. सही जोडियां –

	अ	**–**	**ब**
(अ)	चन्द बरदाई	–	पृथ्वीराज रासो
(ब)	इब्नबतूता	–	मुहम्मद तुगलक
(स)	अभिलेख	–	पुरातात्विक स्त्रोत (साधन)
(द)	बंगाल विभाजन	–	सन् 1905
(इ)	मुस्लिम लीग	–	सन् 1906

5 सही हल करने पर 5 अंक प्राप्त होंगे 1+1+1+1+1=5

उत्तर 3. रिक्त स्थान –

(i) चित्रात्मक

(ii) कृष्ण देव

(iii) अशोक

(iv) जबलपुर

(v) शिवाजी और राजा जयसिंह

5 सही हल करने पर 5 अंक प्राप्त होंगे 1+1+1+1+1=5

उत्तर 4. सत्य/असत्य –

(i) असत्य

(ii) असत्य

(iii) सत्य

(iv) सत्य

(v) सत्य

5 सही हल करने पर 5 अंक प्राप्त होंगे 1+1+1+1+1=5

उत्तर 5. एक वाक्य में उत्तर –

1. विजय नगर राज्य का संस्थापक हरिहर जौर बुक्का था।
2. सिन्धु सभ्यता के निवासी लोहे से अपरिचित थे।
3. अकबर का संरक्षक बैरम खां था।
4. तराइन का द्वितीय युद्ध 1192 में हुआ।
5. दिल्ली सल्तनत की प्रथम शासिका रजिया सुल्तान थी।

5 सही हल करने पर 5 अंक प्राप्त होंगे 1+1+1+1+1=5

उत्तर 6. ऋग्वैदिक काल में स्त्रियों की दशा – इस काल में स्त्रियों को उच्च स्थान प्राप्त था। उन्हें आदर की दृष्टि से देखा जाता था। उन्हें पुरूषों के समान सभी धार्मिक व सामाजिक कार्यों में भाग लेने का अधिकार था। पर्दा प्रथा का प्रचलन नहीं था। स्त्रियों की शिक्षा की उचित व्यवस्था थी। विश्ववरा, घोष, अपाला उस युग की प्रतिमा सम्पन्न स्त्रियां थी। घर में उनका स्थान सम्मानीय था। पत्नी अपने पति के धार्मिक यज्ञों में भाग लेती थी और वह घर की रानी थी। फिर भी स्त्रियां पूर्ण स्वतंत्र नहीं थी विवाह से पूर्व अपने पिता के संरक्षण में तथा विवाह के बाद अपने पति के संरक्षण में रहना होता था। वैदिक युग में सती प्रथा का प्रचलन नहीं था।

4 अंक

(उपरोक्तानुसार 4 बिन्दुओं एवं कोई अन्य बिन्दुओं पर भी विस्तार दिये जाने पर प्रत्येक बिन्दु पर 1 अंक एवं कुल 4 अंक प्राप्त होंगे)

अथवा

सिन्धु सभ्यता की देन –

1. **नगरीय स्वशासन –** नगर की चौड़ी सड़क के दोनों ओर योजनाबद्ध मकान, पानी निकास हेतु नालियों की व्यवस्था, सड़कों की सफाई, हाट–बाजार की मूल्य ओर ना–तौल की व्यवस्थाएं सिद्ध करती है कि उस काल के लोग नगरीय प्रशासन से परिचित थे।
2. **व्यवसाय तथा व्यापारिक व्यवस्थाएं –** कृषि एवं पशुपालन के अलावा मूर्ति उद्योग, ईट उद्योग, वस्त्र उद्योग तथा अन्य शिल्प कला से वस्तुओं का निर्माण प्रमुख था। जल तथा थल दोनों मार्गों से विदेशी व्यापार होता था।
3. विश्व को लेखन कला विधि से परिचत कराया।
4. सिन्धु सभ्यता से वर्तमान तक भारत में प्रकृति के प्रति एक धार्मिक निरंतरता का दृष्टिगोचर होना।

(उपरोक्तानुसार 4 बिन्दुओं एवं कोई अन्य बिन्दुओं पर भी विस्तार दिये जाने पर प्रत्येक बिन्दु पर 1 अंक एवं कुल 4 अंक प्राप्त होंगे)

उत्तर 7. हर्ष ने अशोक की तरह बौद्ध धर्म ग्रहण किया तथा बौद्ध धर्म के प्रचार–प्रसार के लिए प्रयास किए। उसने अपना जीवन भी अशोक की तरह बौद्ध धर्म की उन्नति तथा अपनी प्रजा के कल्याण हेतु समर्पित किया किन्तु दूसरी ओर उसने समुद्रगुप्त की तरह विजय यात्राएं भी की। संपूर्ण उत्तर भारत को उसने एकता के सूत्र मेंबांध दिया। समुद्र गुप्त की तरह भारत को विदेशी आक्रमण से मुक्त रखा। हर्ष एक महान विजेता, कुशल प्रशासक, धर्म परायण, दानी, विद्यानुरागी सम्राट था, इसलिए हर्ष को अशोक एवं समुद्र गुप्त का समन्वय कहा जाता है।

4 अंक

(उपरोक्तानुसार लिखने पर 4 अंक प्राप्त होंगे)

अथवा

मौर्यकालीन स्थानीय प्रशासन – मेगस्थनीज द्वारा लिखित पुस्तक ''इंडिका'' के आधार पर मौर्यकालीन स्थानीय शासन दो भागों में विभाजित था – (1) नगर शासन, (2) ग्राम शासन।

1. **नगर शासन –** नगर के प्रशासन का संचालन क समिति के द्वारा हेाता था, जिसके तीस सदस्य थे। यह समिति छः समितियों में विभाजित थी –
   1. शिल्प समिति – उद्योग धंधों से संबंधित थी।
   2. जन गणना समिति – नागरिकों के जन्म–मरण का लेखा–जोखा रखती थी।
   3. विदेशी यात्री समिति – विदेशियों की गतिविधियों पर दृष्टि रखती थी।
   4. उद्योग समिति – बाजार में बिकने वाली वस्तुओं का निरीक्षण एवं नियंत्रण रखती थी।
   5. वाणिज्य मिति– नाप–तोल तथा क्रय–विक्रय से संबंधित थी।
   6. कर समिति – कर वसूल करती थी। कर बिक्री के मूल्य का 10वां भाग होता था।
2. **ग्राम शासन –** ग्राम शासन की सबसे छोटी इकाई थी। प्रत्येक ग्राम के शासन का संचालन ग्राम सभा करती थी, जिसका अधिकरी ग्रामिक कहलता था। ग्राम सभा न्यायिक कार्य भी करती थी।

(उपरोक्तानुसार लिखने पर 4 अंक प्राप्त होंगे)

उत्तर 8. **गुप्त काल की वैज्ञानिक प्रगति –** गुप्तकाल में विज्ञान की बहुत उन्नति हुई। इस काल में आर्य भट्ट, बराह मिहिर और ब्रह्म गुप्त जैसे वैज्ञानिक हुए। आर्यभट्ट ने पहली बार प्रमाणित किया कि पृथ्वी अपनी छुटी पर घूमती है। सूर्य एवं चन्द्रग्रहण के वैज्ञानिक कारण बताए। उन्होंने दशमलव पद्धति का आविष्कार किया। ब्रह्मगुप्त ने ज्योतिष विद्या पर ब्रह्म–सिद्धांत की रचना की। बराहमिहिर इस काल के प्रसिद्ध ज्योतिषि माने जाते है। उन्होंने वृहत् संहिता,

वृहत् जातक व लघु जातक लिखी। इसके अलावा नागार्जुन धन्वंतरी भी इसकी काल के महान वैज्ञानिक थे। धन्वंतरी ने ''चरक संहिता'' की रचना की।

4 अंक

(उपरोक्तानुसार विस्तार से लिखने पर कुल 4 अंक प्राप्त होंगे)

अथवा

अशोक के धर्म प्रचार के साधन –

1. **बौद्ध धर्म के सिद्धांतों को आचरण में लाना –** अशोक ने स्वयं मांस खाना तथा शिकार करना छोड़ दिया। उसने युद्ध न करने का संकल्प लिया और वह भिक्षु की भांति सादा जीवन व्यतीत करने लगा।
2. बौद्ध धर्म को राजकीय धर्म घोषित किया तथा समस्त राजकीय साधनों को बौद्ध धर्म के प्रचार प्रसार में लगा दिया।
3. **धर्म महायात्रों की नियुक्ति –** इनका प्रमुख कार्य जनता धर्म के सिद्धांतों का प्रचार कर लोगों को चरित्रवान बनाना था।
4. **धर्म यात्राएं –** इनका उद्देश्य ब्राह्मण व साधुओं का दर्शन, उन्हें उपहार दान, जनपद के लोगों से मिलना, उन्हें धर्म संबंधी उपदेश देना आदि था।

(उपरोक्तानुसार लिखने पर कुल 4 अंक प्राप्त होंगे)

उत्तर 9. पल्लव कालीन वास्तुकला को चार शैलियों के नाम के आधार पर रखे गए है –

1. **महन्द्र वर्मन (प्रथम) शैली –** इस समय गुहा मंदिरों का निर्माण हुआ। ये मंदिर पहाड़ियों में स्तंभ युक्त मंडप होते थे।
2. **मामल्ल शैली –** इसमें मुख्यतः मंडपों एवं रथों का निर्माण हुआ। मद्रास के समीप पल्लव नरेश नरसिंह वर्मन प्रथम महामल्ल ने मामल्लपुरम की स्थापना कराई, इसी कारण यह मामल्ल शैली कहलाई। इस शैली के वराह मंडप, महष मंडप और पंच पांडव प्रमुख है।

3. **राजसिंह शैली –** इस समय की अनुपम कृति शोर मंदिर है। इसी समय का कांची का कैलाशनाथ मंदिर बहुत प्रसिद्ध है। कांची के ''बैकुण्ठ पेरूमल'' मंदिर का पल्लव स्थापत्य कला में प्रमुख स्थान रहा है।
4. **अपराजित शैली –** बहुसर मंदिर इस शैली की अनुपम कृति है।

4 अंक

(उपरोक्तानुसार 4 बिन्दुओं को लिखने पर प्रत्येक पर 1 अंक एवं कुल 4 अंक प्राप्त होंगे)

अथवा

चोलों का स्थानीय स्वशासन – चोल शासन व्यवस्था के अन्तर्गत कोट्टम अथवा कुर्रम (गांव) से लेकर मंडल (प्रान्त) तक के लिए प्रतिनिधि संस्थाओं द्वारा स्वशासन की व्यवस्था थी। वलनाडु (कश्मिनरी) की प्रतिनिधि सभा को नगस्तार कहा जाता था ओर नाडु की प्रतिनिधि सभा को ''नाट्टर'' कहा जाता था। गांव में भी ग्राम सभाएं होती थी। इन ग्राम सभाओं में जनतांत्रिक प्रणाली प्रचलित थी। प्रत्येक गांव 30 वार्डों में विभाजित होता था। प्रत्येक वार्ड से एक व्यक्ति चुना जाता था। उसके लिए आवश्यक थ। उसके पास 1.5 एकड़ भूमि हो, अपना मकान हो, वैदिक मंत्रों का ज्ञान हो, आयु 35 से 70 वर्ष के मध्य हो, उसने या उसके संबंधी ने कभी कोइ अपराध न किया हो। गाम सभा के चुनाव के पश्चात उसकी विभिन्न समितियां बनाई जाती थी, जैसे– न्याय समिति, बगीचा समिति, तालाब समिति, विदेशी यात्री समिति आदि। गांव से लगान वसूल करने का अधिकार भी ग्राम सभा का था। ग्राम सभा जनसाधारण के स्वास्थ्य व शिक्षा की भी व्यवस्था करती थी।

(उपरोक्तानुसार वर्णन किये जाने कुल 4 अंक प्राप्त होंगे)

उत्तर 10. हुमायूं की असफलता के कारण –

1. **अफगानों की शक्ति का गलत अनुमान –** हुमायूं शेरशाह की शक्ति का सही अनुमान नहीं लगा पाया, जिसके कारण उसे पराजित होना पड़ा।

2. **समय का दुरूपयोग –** प्रत्येक युद्ध के विजय प्राप्त करने के पश्चात अपने मूल्यवान समय को आमोद प्रमोद में नष्ट कर देता था।
3. **घन की अपव्ययता –** बाबर द्वारा प्रापत अपार धन सम्पत्ति को खुले हाथों से सैनिकों व सरदारों में बांटने व निरंतर युद्ध में रट रहने के कारण राजकोष खाली होता चला गया। हुमायूं ने रिक्त राजकोष की ओर ध्यान नहीं दिया, इसलिए आर्थिक स्थिति खराब हो गई।
4. **उसकी चारित्रिक दुर्बलताएं –** हुमायूं में दृढ संकल्प शक्ति, दूरदर्शिता, कर्मठता तथा परिश्रम का अभाव था। वह अफीमची व विलासी प्रवृत्ति का व्यक्ति था। चारित्रिक, दुर्बलताओं के कारण ही उसका पतन हुआ।

4 अंक

(उपरोक्तानुसार वर्णन किये जाने कुल 4 अंक प्राप्त होंगे)

अथवा

दीन–ए–इलाही – मार्च 1582 ई. में अकबर ने एक नवीन धर्म दीन–ए–इलाही की स्थापना की, जिसका शाब्दिक अर्थ है– ईश्वर का धर्म। इसके प्रमुख सिद्धांत थे :–

1. दीन–ए–इलाही का अनुयायी बनने वाले को अकबर से दीक्षा लेना आवश्यक था।
2. इस धर्म को मानने वाले ईश्वर की दैवी शक्ति में विश्वास करते थे और अकबर को अपना धार्मिक नेता मानते थे।
3. इसके सदस्य अग्नि को पवित्र मानते थे और सूर्य की उपासना करते थे।
4. इसके सदस्य परस्पर अभिवादन करने के लिए ''अल्लाहो अकबर'' और ''जल्ले जलालहू'' शब्दों का प्रयोग करते थे।
5. प्रत्येक सदस्य को अपनी वर्षगांठ पर भोज तथा दान–दक्षिणा देनी पड़ती थी।
6. इसके अनुयायियों के लिए मांस खाना निषेध था।

7. इसके सदस्यों को बूढ़ी स्त्रियों तथा कम उम्र की लड़कियों से शादी करने की मनाही थी।
8. इसके अनुयायियों के लिए दान और उदारता का पालन करना आवश्यक था।

(उपरोक्तानुसार एवंअन्य कोई 4 बिन्दुओं को विस्तार देने पर प्रत्येक बिन्दु पर 1 अंक एवं कुल 4 अंक प्राप्त होंगे)

उत्तर 11. **शिवाजी की अष्ट प्रधान व्यवस्था –** शिवाजी को परामर्श देने के लिए एक मंत्रिपरिषद होती थी। इस परिषद में कुल आठ मंत्री थे जिसे अष्ट प्रधान मंत्रिपरिषद कहा जाता था। सभी मंत्रियों को शिवाजी स्वयं नियुक्त करते थे। आठ प्रधानों के नाम, कार्य थे।

1. **पेशवा या प्रधानमंत्री** – इनका प्रमुख कार्य राज्य के संपूर्ण शासन का निरीक्षण करना तथा राजा की अनुपस्थिति में उसका प्रतिनिधित्व और उसके निर्देशानुसार प्रशासन का संचालन करना।
2. **आमाव्य –** शिवाजी की अष्ट प्रधान मंत्रि परिषद का दूसरा मंत्री आमाव्य कहलाता था। आमाव्य का अर्थ– विभाग का प्रधान होता था जिसे मजूमदार के नाम से भी जाना जाता था।
3. **मंत्री –** मंत्री राजा के दैनिक कार्यों तथा दरबार की कार्यवाही का विवरण रखता था। इसके अतिरिक्त वह राजा के गृह प्रबंध के लिये भी उत्तरदायी होता था।
4. **सचिव –** यह मंत्री राजकीय पत्र–व्यवहार के लिये उत्तरदायी होता था इसके अतिरिक्त परगनों की आमदनी का हिसाब भी इस मंत्री को रखना होता था।
5. **सुमन्त –** शिवाजी की अष्ट प्रधान मंत्री परिषद का यह विदेश मंत्री था। यह राजा को वैदेशिक मामलों में सलाह देता था।

6. **सेनापति** – सेनापति सैन्य विभाग का मुख्य अधिकारी होता था। सैन्य संचालन तथा सेना की व्यवस्था करना उसका प्रमुख कर्तव्य था।
7. **पण्डितराव** – यह मंत्री धर्म तथा दान विभाग का मुखिया होता था। यह राज्य के प्रमुख राजपुरोहित के दायित्वों का निर्वहन करता था।
8. **न्यायाधीश** – यह न्याय विभाग का अध्यक्ष होता था। वह दीवानी तथा फौजदारी झगड़ों का निर्णय करता था। शिवाजी की अष्ट प्रधान मंत्री परिषद में सेनापति को छोड़कर अन्य सातों मंत्री ब्राह्मण होते थे। सभी मंत्रियों को राजकोष से वेतन दिया जाता था।

4 अंक

(उपरोक्तानुसार वर्णन किये जाने कुल 4 अंक प्राप्त होंगे)

अथवा

शिवाजी के साम्राज्य की आय (राजस्व व्यवस्था) के प्रमुख साधन थे –

1. **चौथ** – शिवाजी की आय का एक साधन 'चौथकर' था जिसे वे उस पड़ोसी राज्य से वसूल करते थे जिसे वे जीतकर अपने राज्य में मिलाने की अपेक्षा उसकी सुरक्षा का भार अपने संरक्षण में लेते हुए उसे स्वयं राज्य करने के लिए मुक्त कर देते थे यह उस राज्य की संपूर्ण आय का चौथाई भाग होता था।
2. **सरदेशमुखी** – प्राचीन समय से मराठा क्षेत्र से भूमि कर वसूली का कार्य भूमि कर अधिकारी किया करते थे। इन्हें देशमुख कहा जाता था। इस प्रथा से ये अधिकारी प्रायः किसानों से अधिक कर वसूली कर अपने वेतन की राशि बढ़ाते रहते थे। शिवाजी ने इस प्रथा में संशोधन कर देश–मुखों को संपूर्ण राज्य में संगृहीत आय का दस प्रतिशत वेतन दिए जाने की व्यवस्था की। जो सरदेशी मुखी व्यवस्था कहलाती है।

(उपरोक्तानुसार विस्तार देने पर कुल 4 अंक प्राप्त होंगे)

उत्तर 12. **इलाहाबाद संधि की शर्तें –** लार्ड क्लाइव ने अवध के नवाब शुजाउद्दौला तथा मुगल सम्राट शाहआलम के साथ 1765 ई. में इलाहाबाद की संधि की। इनकी शर्तें –

1. अवध के नवाब ने कंपनी को पचास लाख रूपये युद्ध की क्षतिपूर्ति के रूप में देना स्वीकार किया।
2. कड़ा तथा इलाहाबाद को छोड़कर शेष भाग वहां के नवाब शुजाउद्दौला को लौटा दिया गया।
3. कंपनी नवाब को जो सैनिक सहायता देगी उसका संपूर्ण व्यय नवाब को उठाना पड़ेगा।
4. मुगल सम्राट ने कंपनी को बंगाल, बिहार तथा उड़ीसा की मालगुजारी वसूल करने का आदेश दिया।
5. मुगल सम्राट को अंग्रेजों ने 26 लाख रूपये वार्षिक पेंशन देना स्वीकार किया।

महत्व – इस संधि के द्वारा शुजाउद्दौला के रूप में कंपनी को विश्वासपात्र सहयोगी मिला व मुगल सम्राट से दीवानी के अधिकार प्राप्त कर अप्रत्यक्ष रूप से मुगल सम्राट को शक्तिहीन बना दिया। बंगाल में द्वैध शासन लागू कर कंपनी अपनी सुदृढ़ अवस्था में पहुंच गई। इन सभी उपलब्धियों ने कंपनी को देश में ब्रिटिश साम्राज्य स्थापना करने में बड़ा योगदान दिया। अंग्रेज अब भारत में व्यापारी न होकर सत्ताधारी हो गये।

4 अंक

(उपरोक्तानुसार विस्तार देने पर कुल 4 अंक प्राप्त होंगे)

अथवा

भारत में अंग्रेज–फ्रांसीसी संघर्ष में फ्रांसीसी असफल हुए।

1. **अंग्रेजों की श्रेष्ठ सैनिक शक्ति –** अंग्रेज सैनिक फ्रांसीसियों की तुलना में अधिक अनुशासनबद्ध, प्रशिक्षित तथा हथियारों से सुसज्जित थे।

2. **अंग्रेजी कंपीन का स्वरूप –** ब्रिटिश इस्ट इंडिया कंपनी एक व्यापारिक कंपनी थी, जिस पर ब्रिटिश सरकार का कोई हस्तक्षेप नहीं था। वहीं फ्रांसीसी कंपनी फ्रांस सरकार का अंग भी, उसे अपने हर कार्य के लिये फ्रांस सरकार से अनुमति लेनी पड़ती थी।
3. **कमजोर नौसैनिक शक्ति –** फ्रांसीसियों की नौसैनिक शक्ति अंग्रेजों की अपेक्षा कमजोर थी। फ्रांस के पास शक्तिशाली बेड़े का अभाव था।
4. फ्रांसीसी अफसरों में मतभेद तथा उनके साथ दुर्व्यवहार फ्रांसीसी अफसरों तथा नेताओं के बीच मतभेद थे। जिस कारण फ्रांसीसी सरकार ने अपने गर्वनरों डूप्ले तथा लैली के साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया जिसका प्रभाव फ्रांसीसियों पर पड़ा।

(उपरोक्तानुसार वर्णन किये जाने पर कुल 4 अंक प्राप्त होंगे)

उत्तर 13. प्राचीन भारतीय इतिहास के पुरातात्विक स्त्रोत :–

1. **अभिलेख –** अभिलेख, शिलाओं, चट्टानों, स्तम्भों, धातु पत्रों, मृदुभाण्डों तथा स्तूपों पर अंकित ऐसे लेख है जो तत्कालिक लिपि में उत्कीर्ण है। इनसे तत्कालक समाज की दशा, धार्मिक स्थिति का अध्ययन तथा कालक्रम के निर्धारण में मदद मिलती है। अशोक, कुषाण, गुप्त, वाकारक, चालुक्य, राणकूर आदि अनेक राजवंशों के इतिहास का निर्माण इन अभिलेखों के आधार पर ही किया गया है।
2. **सिक्के –** शक हूण कुषाण आदि की जानकारी हमें उनके सिक्कों से होती है। प्राचीन काल में इतिहास की जानकारी भी तत्कालीन मुद्राओं व सिक्कों से होती है। इनके माध्यम से तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक सांस्कृतिक तथा प्रशासनिक व्यवस्था की जानकारी मिलती है।
3. **स्मारक –** स्मारकों के अन्तर्गत भवन तथा मूर्तियों का समावेश होता है। प्राचीन मूर्तियों के अध्ययन में हमें स्थापत्य कला के ज्ञान के अतिरिक्त

धार्मिक विश्वास, कर्मकाण्ड, पूजा पद्धति तथा सामाजिक जीवन के संबधं में भी सूचनायें प्राप्त होती है।

4. **कलाकृतियां –** उपयोगी कलाकृतियों से तत्कालीन समाज के आर्थिक विकास को जाना जा सकता है। भारत से प्राप्त मिट्टी के बर्तनों से कला प्रियता का ज्ञान होता है तथा उनकी मिट्टी की जांच करके उनकी आयुका पता लगा कर इतिहास के कालक्रम की जानकारी मिलती है।

5 अंक

(उपरोक्तानुसार एवं अन्य बिन्दुओं को विस्तार देने पर प्रत्येक बिन्दु पर 1 अंक एवं कुल 5 अंक प्राप्त होंगे)

अथवा

प्राचीन पाषाण युग एवं नवपाषाण युग में अन्तर :–

क्र.	प्राचीन पाषाण युग	नवपाषाण युग
1	भोजन– इसक काल में मानव का भोजन कंदमूल, फल व मांस था।	इस काल में मानव अनाज, दूध, दही, शहद का भी उपयोग करता था।
2	इस काल में मानव वस्त्र के रूप में पेड़ की छाल व पशुओं की खाल का प्रयोग करता था।	इस काल में पशुओं के बालों तथा पौधों के रेशों बने वस्त्रों का प्रयोग करते थे।
3	इसका काल में मानव वृक्षों पर या गुफाओं में निवास करता था।	इस काल में छप्पर व मिट्टी के मकान बनाने शुरू कर दिये।
4	कृषि कार्य से अपरिचित था।	कृषि करना व अनाज उत्पादन करना सीख गया।
5	आग का आविष्कार कर मानव ने विकास में प्रभावी कदम रखा।	पहिये के आविष्कार ने पूर्ववर्ती विकास में नई दिशा प्रदान की।

(उपरोक्तानुसार वर्णन करने कुल 5 अंक प्राप्त होंगे)

उत्तर 14. अलाउद्दीन खिलजी की बाजार नियंत्रण नीति – अलाउद्दीन को विद्रोहो का दमन मंगोलो के आक्रमण से सुरक्षा तथा साम्राज्य विस्तार के लिय बड़ी सेना रखनी पड़ी और इस बड़ी सेना के व्यय के लिय उसने बाजार नियंत्रण नीति अपनाई। इसके लिये उसने निम्नलिखित कार्य किये।

1. वस्तुओं के मूल्यों पर नियंत्रण – उसने जीवन निर्वाह की वस्तुओं की कीमत निश्चित कर दी तथा काफी कम कर दी, जिससे सैनिक नाममात्र के वेतन में भी आराम से जीवन निर्वाह कर सकता था।
2. अनाज को एकत्रित करना।
3. व्यापारियों पर नियंत्रण– व्यापारी शहाने मंडी नामक दफ्तर में नाम लिखा कर ही माल बेच सकते थे।
4. योग्य कर्मचारियों की नियुक्ति की।
5. कठोर दण्ड व्यवस्था– बर्नी के अनुसार ''कभी कोई व्यापारी कम तोलता था तो उसके शरीर से उतने ही भार का मांस काट लिया जाता था।

5 अंक

(उपरोक्तानुसार एवं अन्य बिन्दुओं को विस्तार देने पर प्रत्येक बिन्दु पर 1 अंक एवं कुल 5 अंक प्राप्त होंगे)

अथवा

भक्ति आंदोलन के प्रभाव :–

1. **हिन्दुओं में आशा तथा साहस का संचार :–** भक्ति आंदोलन से हिन्दुओं में आत्म बल का संचार हुआ। जिसके परिणाम स्वरूप हिन्दुओं की निराशा दूर हुई और हिन्दू अपनी सभ्यता व संस्कृति को बचाने में सफल रहें।
2. **मुसलमानों के अत्याचारों में कमी :–** भक्ति आंदोलनो के संतों द्वारा प्रतिपादित शिक्षाओं व उपदेशों का प्रभाव मुस्लिम शासक पर पड़ा। विभिन्न धर्मों के मध्य एकता स्थापित हुई, जिससे मुसलमानों के अत्याचार कम हो गए।

3. **बाहरी आडम्बरों में कमी :–** भक्ति आंदोलन के सभी संतों ने अपने उपदेशों में आडम्बरों की निंदा की और पवित्रता पर बल दिया। इन उपदेशों का प्रभाव यह हुआ कि लोग बाहरी आडम्बरों को त्यागकर सरल जीवन की ओर अग्रसर हुए।
4. **वर्गीयता तथा संर्कीणता पर आघात** :– भक्ति आंदोलन में संतों ने ऊंच–नीच, छूत–अछूत का भेदभाव दूर करने का प्रयत्न किया जिसके परिणाम स्वरूप समाज में व्याप्त वर्गीयता और संर्कीणता को आघात लगा।
5. **आत्म गौरव एवं राष्ट्र भावना का प्रादुर्भाव :–** भक्ति आंदोलन के संतों की ओजस्वी वाणी ने मनुष्य में आत्म गौरव एवं राष्ट्र भावना का संचार किया जिसके परिणाम स्वरूप कालान्तर में महाराष्ट्र, पंजाब आदि में राष्ट्रीय आंदोलनों का प्रादुर्भाव हुआ।
6. **प्रांतीय भाषाओं का विकास** :– भक्ति आंदोलनों के संतों ने अपने–अपने उपदेश लोकभाषाओं में प्रचारित किए फलस्वरूप प्रांतीय भाषाओं– हिन्दी, मराठी, बंगाली, पंजाबी आदि का विकास हुआ।

(उपरोक्तानुसार 5 बिन्दुओं को विस्तार देने पर प्रत्येक बिन्दु पर 1 अंक एवं कुल 5 अंक प्राप्त होंगे)

उत्तर 15. **अकबर की राजपूत नीति –** अकबर ने अपने साम्राज्य का विस्तार करने के लिए यह समझ लिया था कि राजपूतों के सहयोग से साम्राज्य को स्थिरता प्राप्त होगी। अकबर ने राजपूतों की ओर मित्रता का हाथ बढ़ाया और उनसे वैवाहिक संबंध स्थापित किए। अपने अधीन राजपूत राजाओं से उसने आदर व्यवहार किया और उनके धार्मिक भावनाओं को ठेस नहीं पहुंचाई व उसने राज्य के उच्च पदों पर राजपूतों को नियुक्त किया। अकबर की इस नीति का प्रभाव कुछ राजपूत राजाओं पर पड़ा।

परिणाम –

1. अकबर की राजपूत नीति के परिणाम स्वरूप राजपूतों का मुगलों से संबंध सौहाद्रपूर्ण हो गए जिससे राजपूतों को निरंतर युद्धों से मुक्ति मिली और वहां शांति की स्थापना हुई।
2. इस नीति के परिणाम स्वरूप राजपूतों पर अकबर का आधिपत्य स्थापित हो गया, इससे उत्तर भारत में राजनीतिक एकता की स्थापना हुई।
3. इस नीति द्वारा अकबर को बहुत लाभ हुआ। बिना किसी परेशानी व खर्च के राजपूतों की विशाल एवं शक्तिशाली सेना उसके अधीन हो गई।
4. इस नीति से राजपूत राजाओं को अपनी योग्यता का प्रदर्शन करने का उचित अवसर मिला।

5 अंक

(उपरोक्तानुसार लिखने पर कुल 5 अंक प्राप्त होंगे)

अथवा

''शाहजहां का शासन काल मुगल काल का स्वर्ण युग था''। इसे निम्नलिखित तथ्यों के अध्ययन से स्पष्ट कर सकते हैः–

1. **स्थापत्य कला का विकास –** इस काल में स्थापत्य कला अपनी उन्नति के चरम शिखर पर पहुंच चुकी थी। उस समय की इमारतों में संगमरमर का काफी प्रयोग किया गया। इसके शासन काल की इमारतों में सोने के रंगों का प्रयोग, रत्नों एवं मणियों का कलापूर्ण जड़ाव आदि विशेषता थी। आगरा के किले में शाहजहां द्वारा बनाई गई इमारतों में दिवाने आम, मछली भवन, दिवाने खास, शीश महल, ताजमहल आदि का निर्माण कराया गया था।
2. **चित्र कला का विकास –** शाहजहां के काल में चित्र कला का काफी विकास हुआ। ये चित्र व्यक्तियों की विभिन्न स्थितियों व मुद्राओं के थे। हसिये की चित्र कला में इस काल में बहुत उन्नति हुई। इस काल क प्रमुख चित्रकारों में फकीर, उल्ला, अनूप, चित्रमणि आदि प्रमुख थे।

3. **संगीत व नृत्य कला –** शाहजहां ने अपने दरबार में कई संगीतकारों को संरक्षण दिया था, जिसमें जगन्नाथ, जर्नादन, सुखदेव, सूरसेन आदि अधिक प्रमुख थे।
4. **प्रसिद्ध बगीचों का निर्माण –** शाहजहां ने नियोजित ढंग से कई भव्य बगीचों का निर्माण करवाया, जिसमें अंगूरी बाग (आगरा), शालीमार बाग (लाहौर), तालकटोरा बाग (दिल्ली) अपनी सुन्दरता के लिए आज भी प्रसिद्ध है।
5. **शिक्षा तथा साहित्य का विकास –** शाहजहां ने शिक्षा के प्रचार प्रसार के लिए कई नवीन मदरसों का निर्माण कराया था। उसने अपने दरबार में विद्वानों को आश्रम दिया। उसके शासनकाल में प्रसिद्ध विद्वानों में सैयद जमालुद्दीन शेख नजीरी, दाराशिकोह आदि थे।

(उपरोक्तानुसार वर्णन करने पर कुल 5 अंक प्राप्त होंगे)

उत्तर 16. 17वीं शताब्दी में शिवाजी के नेतृत्व में मराठा शक्ति का अभ्युदय और उत्थान भारतीय इतिहास की एक आश्चर्यजनक घटना थी। मराठों के उत्कर्ष के निम्नलिखित कारण थे :–

1. **महाराष्ट्र की प्राकृतिक दशा :–** सहायाद्रि पवर्त श्रेणिं की ऊंची चोटियों एवं स्थूल चट्टानों को मराठों ने अपने परिश्रम से सुरक्षात्मक दुर्गो का रूप दिया। इन्हीं दुर्गों की सहायता से मराठों ने उत्तर की ओर से आने वाले आक्रमणकारियों से अपनी रक्षा की।
2. **धार्मिक जाग्रति :–** 15वीं एवं 16वीं शताब्दी की धार्मिक जागृति का प्रभाव महाराष्ट्र पर भी पड़ा। इस धार्मिक जागृति के विचारक एवं नेता गुरूदास, एकनाथ दामोदर, बामन पण्डित, ज्ञानेश्वर तथा चक्रधर थे। इस धार्मिक जागृति के कारण मराठा सैनिक कर्मयोगी तथा कर्मठ देशभक्त बने।
3. **भाषा की एकता :–** भाषा की एकता से राजनैतिक एवं सांस्कृतिक एकता को बल मिलता है। अतः महाराष्ट्र में भी मराठी भाषा एवं मराठी साहित्य ने

लोगों को राष्ट्रीय प्रेम तथा एकता के बन्धन में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन्हीं प्रयासों से मराठा जाति एकता के सूत्र में बंधे।

4. **शिवाजी का कर्मठ व्यक्तित्व :–** मराठों के उत्कर्ष में शिवाजी के व्यक्तित्व ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे न केवल एक योग्य सेनापति बल्कि महान राष्ट्र निर्माता भी थे। शिवाजी ने अपनी व्यक्तिगत वीरता, साहसपूर्ण सुयोग्य नेतृत्व कुशल व्यवहार तथा अपने अथक प्रयासों से बिखरी मराठा जाति को एक करके राष्ट्रीयता की भावना का संचार हुआ। सर यदुनाथ सरकार के अनुसार शिवाजी भारत का अन्तिम हिन्दू राष्ट्र निर्माता था। जिसने हिन्दुओं के मस्तक को एक बार फिर ऊंचा उठाया।
5. **आर्थिक दुर्व्यवस्था –** राजनीतिक पराधीनता से महाराष्ट्र में आर्थिक दासता आई जो काफी विनाशकारी साबित हुई। आर्थिक दृष्टि से मराठों की स्थिति बड़ी दयनीय हो गई थी। मुस्लिम आक्रमणों तथा भीषण युद्धों के कारण वहां के लोगों की आर्थिक स्थिति दिनों दिन खराब होती गई।

5 अंक

(उपरोक्तानुसार शिवाजी के विषय में लिखने पर 1 अंक एवं चार बिन्दु पर वर्णन किये जाने पर 4 अंक कुल 5 अंक प्राप्त होंगे)

अथवा

शिवाजी एक कुशल सैनिक विजेता तथा मराठा साम्राज्य के निर्माता होने के साथ–साथ एक कुशल प्रशासक भी थे। शिवाजी राज्य के सर्वोच्च अधिकारी थे तथा राज्य की समस्त शक्तियां उन्हीं के हाथों में केन्द्रित थे।

1. **आदर्श तथा उच्च व्यक्तित्व :–** शिवाजी का व्यक्तित्व बहुमुखी तथा उच्चकोटि का देश भक्त एवं राष्ट्र निर्माता के रूप में याद किया जाता है। वास्तव में शिवाजी का व्यक्तित्व इतना आकर्षक था कि उनसे मिलने वाला प्रत्येक व्यक्ति प्रभावित हो जाता था।

2. **उज्जवल चरित्र :–** शिवाजी का चरित्र अत्यंत उज्जवल था। वे शत्रु की स्त्री को भी मां तथा बहन के समान समझते थे। वे प्रजा की बहू बेटियों को ही नहीं वरन शत्रु की बहू बेटियों को भी अपनी बेटियां मानते थे।
3. **महान संगठनकर्ता :–** शिवाजी एक महान संगठनकर्ता थे। उन्होंने मराठा जाति को संगठित करके उसे एक सैनिक जाति के रूप में परिणित कर दिया।
4. **महान सेना नायक :–** शिवाजी एक महान कुशल सेना नायक थे। वे स्वयं युद्ध का संचालन बड़ी कुशलता के साथ करते थे।
5. **महान विजेता :–** शिवाजी एक महान सेना नायक होने के साथ–साथ एक महान विजेता भी थे। 1656 ई. में शिवाजी ने जावली पर आक्रमण कर अधिकार कर लिया। 1674 में राज्याभिषेक के पश्चात शिवाजी पेड़गांव, भूताल छावनी, फर्ली तथा कोल्हापुर पर जीत दर्ज की।
6. **कुशल प्रशासक :–** वह केवल एक साहसी तथा सफल सैनिक विजेता ही नहीं वरण अपनी प्रजा के बुद्धिमान शासक भी थे। शिवाजी जनता की सेवा को ही अपना धर्म समझते थे। शिवाजी ने जमींदारी, जागीरदारी तथा ठेकेदारी प्रथा को पूर्णतया समाप्त कर दिया।

(शिवाजी के विषय में संक्षिप्त लिखेन पर 1 अंक एवं उपरोक्तानुसार 4 बिन्दुओं पर विस्तार देने पर अंक कुल 5 अंक प्राप्त होंगे)

उत्तर 17. भारत में सर्वप्रथम धर्म सुधार का आह्वान राजा राम मोहन राय ने किया था। यही वजह है कि उन्हें भारत के नवजागरण का अग्रदूत सुधार आन्दोलन का प्रवर्तक स्वीकार करते है।

1. **महान चिंतक –** राजा राम मोहन राय दूरदर्शी होने के कारण साथ एक महान चिंतक भी थे। सर्वप्रथम हिन्दू धर्म में व्याप्त कुरीतियों एवं आड़म्बरों के खिलाफ आवाज उठाई। उन्होंने सबसे पहले सती प्रथा के विरूद्ध तर्क संगत वक्तव्य जारी किया और इसे रोकने हेतु समाज को प्रेरित किया। इतना ही

नहीं ब्रिटिश प्रशासन को उन्होंने सती प्रथा के निषेध हेतु कानून बनाने के लिए बाह्य किया।

2. **आधुनिक शिक्षा के प्रबल समर्थक –** राजा राम मोहन राय भारत में आधुनिक शिक्षा के प्रबल समर्थक थे। इनकी मान्यता थी कि पाश्चात्य शिक्षा के द्वारा ही भारत में एकता सद्भाव और स्वाधीनता के प्रति जिज्ञासा निर्मित की जा सकती है। पाश्चात्य शिक्षा के द्वारा ही भारतीयों को प्रगतिशील विचारों की जानकारी मिलेगी और इसमें राष्ट्रप्रेम की भावना बलवती होगी।
3. **राष्ट्रवाद के जनक –** भारत के आर्थिक शोषक और ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ सर्वप्रथम राष्ट्रवाद का शंखनाद राजाराम मोहन राय ने ही किया। उनकी मान्यता थी कि विभिन्न वर्षों विभक्त भारतीय समाज में सुधार एकेश्वरवाद के प्रचार से सामाजिक एकता का वातावरण निर्मित किया जा सकता है तथा इसके द्वारा जातीयता व कट्टरता को समाप्त किया जा सकता है।
4. **पत्रकारिता के अग्रदूत –** राजाराम मोहन राय भारतीय पत्रकारिता के अग्रदूत स्वीकार किए गए है। उन्होंने एक समाचार पत्र संवाद कौमुदी का प्रकाशन किया था। इसके अतिरिक्त बंगला, फारसी, हिन्दी और अंग्रेजी में भी उन्होंने पत्र–पत्रिकाओं का प्रकाशन किया। इन पत्रों के माध्यम से साहित्यिक, वैज्ञानिक तथा राजनीतिक विचारों का प्रचार किया। सन् 1833 में साम्राज्यवादी ताकतों को बेनकाब करके समाचार पत्रों के नियमन के विरूद्ध आन्दोलन किया। फलस्वरूप सन 1853 में सरकार ने समाचार पत्रों को कुछ स्वतंत्रता प्रदान की।
5. **विश्व राजनीति के ज्ञाता –** राजाराम मोहन राय विश्व राजनीति के घटनाक्रमों को सूक्ष्म अध्ययन करते थे। अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों के वे प्रबल हिमायती थे। प्रो. विपिनचन्द्र का मत है कि राजाराम मोहन राय ने अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं को दिलचस्पी ली और हर जगह उन्होंने स्वतंत्रता,

जनतंत्र और राष्ट्रीयता के आन्दोलनों का समर्थन, हर प्रकार के अन्याय, उत्पीड़न और जुर्म का विरोध किया।

5 अंक

(उपरोक्तानुसार एवं कोई अन्य कारण लिखने पर प्रत्येक बिन्दु पर 1 अंक कुल 5 अंक प्राप्त होंगे)

अथवा

सैनिक कारण :– 1857 ई. के विद्रोह का आरंभ कंपनी के फौज के सैनिकों की बगावत से हुआ ब्रिटिस ईस्ट इण्डिया कंपनी की अनवरत युद्धों में विजय दिलाने वाले भारतीय सैनिक, जिनकी संख्या अंग्रेजों की तुलना में तिगुनी थी। एकाएक किन परिस्थितियों में विद्रोह हुए इसके निम्न कारण थे –

1. **भारतीय समाज के अभिन्न अंग है –** ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के सैनिक भारतीय समाज के अभिन्न अंग थे जो भारतीयों की दुखद स्थिति से भली भांति परिचित थे। ब्रिटिश नीतियों के फलस्वरूप भारतीय हस्तशिल्प उद्योग के पतन और कृषकों की दयनीय आर्थिक दशा से भारतीय सैनिक ग्लानि से अपने आपको ही दोषी मानते थे।
2. **भेदभाव की नीति –** कम्पनी की फौज के भारतीय सैनिकों को अंग्रेज सैनिक एवं अधिकारी अपमानित तो करते ही थे साथ ही उनके दायित्व सकल प्रदर्शन के बाद भी उन्हें पदोन्नति नहीं मिलती थी और न ही उन्हें वेतन लाभ मिल पाता था भारतीय सैनिकों के उन्नति के लिए सारे रास्ते बंद कर रखे थे।
3. **सैनिकों का अपमान –** अंग्रेज सैनिक अधिकारी भारतीय सैनिकों को सदैव अपमानित करते रहते थे और अधिकारी अपनी जातीय श्रेष्ठता और रंग के सामने भारतीय सैनिकों को हीन समझते थे। फलस्वरूप दोनों के मध्य मतभेद कायम हा चुका था। फलतः 1857 ई. के विद्रोह में एकजुट होकर अंग्रेजों के विरूद्ध मैदान में आ गए।

4. **सामरिक स्थलों पर अधिकार –** ब्रिटिश फौज में भारतीयों की संख्या एक के अनुपात में तीन थी। संख्या अधिक होने के कारण प्रमुख सामरिक स्थलों पर भारतीय सैनिकों का ही अधिकार था। इससे विद्रोह की चर्चा में शस्त्रों की पूर्ति आसानी से होता देख वे विद्रोह के लिए तत्पर हो गए शीघ्र ही यह विद्रोह विस्तृत हो गया।
5. **अंग्रेज सैनिकों की पराजय –** विद्रोह के पूर्व अंग्रेज सैनिकों की कुछ युद्धों में शर्मनाक पराजय हुई थी। इस पराजय के साथ ही अंग्रेज सैनिकों के श्रेष्ठ हथियारों और सदैव विजेता होने की धारणा समाप्त हो गई। भारतीय सैनिकों के मन में यह बात बैठ गई थी कि अंग्रेज सैनिकों को परास्त करना बहुत कठिन या दुष्कर कार्य नहीं है। प्रथम अफगान युद्ध 1834–1842 और क्रीमिया युद्ध 1854–1856 में अंग्रेजों की पराजय ने प्रतिष्ठा को समाप्त कर दिया। फलस्वरूप विद्रोह आसान हो गया था।

(उपरोक्तानुसार विस्तार दिये जाने पर पूर्ण 5 अंक प्राप्त होंगे।)

उत्तर 18. भारतीय पुनर्जागरण के भारतीय समाज पर पड़ने वाले प्रभाव –

1. **बुद्धिवादी दृष्टिकोण का विकास –** भारतीय समाज में व्याप्त धार्मिक, सामाजिक व अन्य कुरीतियों, अंधविश्वास, रूढ़िवादिता का ह्रास हुआ क्योंकि अब भारतीय इन समस्याग्रस्त प्रथाओं पर बुद्धि व तर्क के आधार पर सत्य की खोज करने लगे थे।
2. **धार्मिक आड़म्बरों की समाप्ति –** पुनर्जागरण से भारतीय समाज में नई चेतना जागृत हुई, परिणामस्वरूप धर्म के नाम पर विभिन्न बाह्य आडम्बरों तथा कर्मकाण्डों को लोगों ने नकार दिया तथा इनसे होने वाले व्यय तथा परेशानियों से मुक्त हुए।

3. **सामाजिक कुरीतियों पर नियंत्रण –** जैसे सती प्रथा, बाल विवाह, बहुविवाह, छुआछूत, स्त्री की उपेक्षा आदि के विरोध में पुनर्जागरण द्वारा जनमत तैयार किया गया तथा इसमें से कई बुराईयों को समाप्त करने में सफलता मिली।
4. भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के प्रति आकर्षण नवजागरण के फलस्वरूप भारतीय सभ्यता और संस्कृति पर गौरव महसूस किया जाने लगा।
5. राष्ट्रीय एकता व देशभक्ति का संचार।

5 अंक

(उपरोक्तानुसार विस्तार से लिखने कुल 5 अंक प्राप्त होंगे)

अथवा

भारत में अंग्रेजी शासन के सामाजिक एवं धार्मिक प्रभाव –

सामाजिक प्रभाव –

1. पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से संयुक्त परिवार प्रथा टूटने लगी।
2. जाति प्रथा के बंधन ढीले हो गये।
3. नये बुद्धिजीवी वर्ग का उदय हुआ हुआ, जिसने भारतीय समाज को सुधारने और उसका आधुनिकीकरण करने का महत्वपूर्ण कार्य किया।
4. स्त्री शिक्षा पर बल दिया गया, स्त्रियों की दशा सुधारने में पाश्चात्य विचारधारा का विशेष योगदान रहा।

धार्मिक प्रभाव –

1. धार्मिक रूढ़ियों और अंधविश्वासों को लोग त्यागने लगे। आपसी तर्क वितर्क व कसौटी के आधार पर प्रत्येक मत को परखा जाने लगा।
2. आस्था के आधार पर निर्णय न लेते हुए बुद्धि के आधार पर निर्णय लिये जाने लगे।
3. इस समय भारत में एक नये धर्म ईसाई धर्म का प्रचार एवं प्रसार हुआ। कई निम्न जाति के लोग ईसाई बनाये गये।

(उपरोक्तानुसार एवं अन्य कोई 5 का विस्तार देने पर प्रत्येक पर 1 अंक कुल 5 अंक प्राप्त होंगे)

उत्तर 19. 1857 की क्रांति में योगदान :– म.प्र. के स्वतंत्रता संग्राम की प्रमुख गतिविधियां 1857 की क्रांति से ही प्रारंभ है। 1857 की क्रांति का प्रारंभ मध्यप्रदेश में महाकौशल क्षेत्र से उस समय हुआ जबकि एक भारतीय सैनिक ने अंग्रेजी सेना के एक अधिकारी पर प्राणघातक हमला किया था। इसके पश्चात इस क्रांति का प्रारंभ ग्वालियर, इन्दौर, भोपाल, सागर, जबलपुर, होशंगाबाद आदि में भी हुआ। म.प्र. में 1857 की क्रांति में प्रमुख योगदान देने वाले क्रांतिकारी थे – तात्याटोपे, महारानी लक्ष्मीबाई, अवन्ती बाई, राणा बख्तावर सिंह, शहीद नारायण सिंह तथा ठाकुर रणपाल सिंह आदि। 1857 के क्रांतिकारियों में झांसी की रानी लक्ष्मीबाई तथा तात्या टोपे के नाम विशेष उल्लेखनीय है। रानी लक्ष्मीबाई ने देशभक्त विद्रोही सैनिकों का नेतृत्व करते हुए ब्रिटिश सैनिकों को भयभीत कर दिया। झांसी हाथ से निकल जाने पर लक्ष्मीबाई अपने साथी तात्या टोपे की सहायता से ग्वालियर पर अधिकार करने में सफल हुई। उन्होंने बड़े उत्साह से ग्वालियर पर जनता को जाग्रत किया। ब्रिटिश सेना ने उनके किले को घेर लिया वे बड़े ही उत्साह से अपनी सेना का संचालन करती हुई युद्ध क्षेत्र में उतर पड़ी परंतु ब्रिटिश सेना के आघात से वे घायल हुई तथा उनका स्वर्गवास हो गया। उनके सामने ही तात्या टोपे ने म.प्र. के अनेक क्षेत्रों में सफलतापूर्वक ब्रिटिश सेनाओं से युद्ध किया परंतु एक विश्वासघाती षड़यंत्र के कारण अंग्रेजों ने उसे बन्दी बनाकर फांसी पर चढ़ा दिया।

1857 की क्रांति संपूर्ण भारत में असफल हो गई थी। अतः म.प्र. में उसे सफलता नहीं मिली परंतु यह भी सत्य है कि म.प्र. में इस क्रांति की व्यापकता ने यहां की राष्ट्रीयता की भावना को उच्च स्तर पर पहुंचा दिया था।

5 अंक

(उपरोक्तानुसार वर्णन किये जाने पर 5 अंक प्राप्त होंगे)

अथवा

म.प्र. में प्राप्त प्रमुख स्मारकों का परिचय निम्नांकित है :–

1. **भूमरा का शिव मंदिर :–** गुप्त काल भूमरा का शिव मंदिर वास्तुकला का अनुपम नमूना है। म.प्र. के सतना जिलें में भूमरा नामक स्थान पर गुप्तकालीन शिव मंदिर प्राप्त हुआ है।
2. **तिगवा का विष्णु मंदिर :–** तिगवा का विष्णु मंदिर गुप्तकालीन वास्तुकला का सुन्दर नमूना है। म.प्र. के जबलपुर जिले में तिगवा नामक स्थान पर गुप्तकालीन विष्णु मंदिर प्राप्त हुआ।
3. **नचनाकुठार का पार्वती मंदिर :–** म.प्र. में पन्ना जिले में अजयगढ़ के समीप रचना कुठार नामक स्थान है। यहां पार्वती का मंदिर है।
4. **एरण का विष्णु मंदिर :–** म.प्र. सागर जिले के ऐरण नामक स्थान से गुप्तकालीन विष्णु मंदिर के अवशेष मिले है।
5. **सांची का मंदिर :–** म.प्र. में सांची का मंदिर अत्यंत प्राचीन बताया जाता है यह मंदिर प्रारंभिक गुप्त परम्परा में महत्वपूर्ण मंदिर है।
6. **उदयगिरि की गुफाएं :–** म.प्र. के विदिशा जिले में उदयगिरि की 20 गुफाएं स्थित है। ये गुफाएं गुप्तकालीन, स्थापत्य कला का अनुपम उदाहरण है। इन गुफाओं को उदयगिरि की पहाड़ियों की पूर्वी ढाल को खोदकर तराशा गया है।
7. **बाघ की गुफाएं :–** म.प्र. के विन्ध्याचल की पहाड़ियों में बाघ की गुफाएं स्थित है।
8. **पिपरिया का विष्णु मंदिर :–** म.प्र. के सतना जिले में उचेहरा के पास पिपरिया नामक स्थान पर विष्णु मंदिर है।
9. **कन्दरिया महादेव का मंदिर :–** यह मंदिर खजूराहों में स्थित है।
10. **भरहुत का स्तूप :–** म.प्र. के सतना जिले में है। यह अशोक द्वारा बनवाया गया।

11. **सांची का स्तूप :–** सांची का स्तूप म.प्र. के रायसेन जिले में है। इसको अशोक द्वारा बनवाया गया था। इसमें महात्मा बुद्ध के दो शिष्यों के अवशेष है।

12. **भर्तुहरि गुफाएं :–** म.प्र. के उज्जैन जिले में बालियादेह महल के पास में है। राजा भर्तुहरि की स्मिृति में परमार देश के शासकों ने बनवाया था।

(उपरोक्तानुसार एवं अन्य 10 बिन्दुओं को विस्तार देने पर प्रत्येक पर ½ अंक कुल 5 अंक प्राप्त होंगे)

उत्तर 20. पुर्तगालियों के पतन के निम्न कारण थे :–

1498 में पुर्तगाली नाविक बास्कोडिगामा का भारत आगमन, 1505 में प्रथम पुर्तगाली गवर्नर की नियुक्ति, फ्रांसिस्को डी अल्मीड़ा अलबुकर्क द्वारा गोवा को मुख्य कार्य क्षेत्र बनाना। वे साम्राज्य की स्थापना नहीं कर पाये। सोलहवीं शताब्दी के मध्य पतन की प्रक्रिया शुरू हो गई।

1. **अल्बुकर्क के निर्बल उत्तराधिकारी :–** अल्बुकर्क के समान उनके उत्त्राधिकारी योग्य तथा प्रतिभावन नहीं थे। वे अत्यंत स्वार्थी तथा निर्बल थे परिणाम स्वरूप पुर्तगाल साम्राज्य का पतन होना अनिवार्य हो गया।
2. **धार्मिक असहिष्णुता की नीति :–** पुर्तगालियों ने भारत में धार्मिक कट्टरता की नीति का पालन किया। उन्होंने हिन्दू तथा मुसलमान दोनों को ईसाई बनाने के प्रयास किए। आगे चलकर उन्होंने हिन्दुओं के मंदिरों तक को गिराने के प्रयास किये।
3. **प्रशासनिक दोष :–** पुर्तगाली शासन व्यवस्था अनेक दोषो से ग्रस्त थी। कर्मचारियों को अत्यंत कम वेतन दिया जाता था।
4. **ब्राजील की खोज :–** पुर्तगालियों ने जब दक्षिण अमरीका में ब्राजील की खोज कर ली तो उनका समस्त ध्यान उसे बसाने में लग गया। इस प्रकार भारत के प्रति उनकी रूचि में कमी आ गई।

5. **सीमित साधन :–** पुर्तगालियों ने धार्मिक प्रचार में अपार धन व्यय किया था जिससे राजकीय कोष रिक्त होने लगा था। धन तथा जन दोनों का ही उनके पास अभाव था।
6. **मुगलों का विरोध :–** पुर्तगालियों द्वारा लूटपात करने से मुगल सम्राट क्रोधित हुआ तथा उनका विरोध करने लगा इसके अतिरिक्त मुगलों ने दक्षिण भारत में भी अपने साम्राज्य का विस्तार कर पुर्तगालियों की साम्राज्यवादी नीति को समाप्त कर दिया।

उपरोक्त कारणों से भारत में पुर्तगालियों का पतन हो गया था।

6 अंक

(उपरोक्तानुसार एवं अन्य कारणों को विस्तार देने पर प्रत्येक बिन्दु पर 1 अंक कुल 6 अंक प्राप्त होंगे)

अथवा

बक्सर के युद्ध के कारण –

1. **मीर कासिम के शासन संबंधी सुधार** – मीर कासिम (नवाब) ने बंगाल के शासन में सुधार आरंभ कर अंग्रेजों की शक्ति को सीमित करना चाहा, जो अंग्रेजों के लिए असहनीय थ। जिसके कारण अंग्रेजों ने मीर कासिम से नवाबी छीन ली तथा उससे युद्ध करने की तैयारी में जुट गए।
2. **अंग्रेजों की निरंकुशता** – अंग्रेज निरंकुश होकर बंगाल को लूटना चाहते थे तथा कंपनी के कर्मचारी अत्यधिक अनुचित व्यवहार करते थे, जो नवाबी शक्ति के लिए असहनीय था।
3. **सभी व्यापारियों को निःशुल्क व्यापार की सुविधा** – नवाब ने देशी व्यापारियों को व्यापार की निःशुल्क सुविधा प्रदान कर दी जिससे अंग्रेज चिढ़ गए।
4. अवध के नवाब सुजाउद्दौला द्वारा स्वार्थ पूर्ति के लिए मीर कासिम की सहायता।

महत्व –

1. प्लासी के युद्ध ने अंग्रेजों की सैनिक श्रेष्ठता को सिद्ध कर दिया। अंग्रेज उत्तरी भारत की महत्वपूर्ण शक्ति बन गए।
2. बक्सर के युद्ध में बंगाल के नवाब के अलावा अवध के नवाब सिराजुद्दौला और दिल्ली का सम्राट शाह आलम पराजित हुए थे जिससे अंग्रेजों का प्रभाव दिल्ली तक स्थापित हो गया।
3. बक्सर के युद्ध के पश्चात बंगाल और बिहार पर आधिपत्य स्थापित होने से ईस्ट इंडिया कम्पनी व्यापारिक संस्था से एक राजनीति संस्था बन गई।

(उपरोक्तानुसार कारण पर 3 अंक एवं महत्व पर 3 अंक कुल 6 अंक प्राप्त होंगे)

उत्तर 21. भारत में राष्ट्रीय चेतना के उदय होने के कारण :–

19वीं शताब्दी के अन्त में और 20वीं शताब्दी के प्रारंभ में एक नवीन चेतना का उदय हुआ। इसके मूल कारण निम्नलिखित थे :–

1. **पाश्चात्य शिक्षा का प्रसार :–** अंग्रेजी भाषा के अध्ययन से भारत के अनेक भाषा भाषी लोग एक दूसरे के संपर्क में आए इससे राष्ट्रीय एकता को प्रोत्साहन मिला।
2. **लार्ड लिटन की अत्याचार पूर्ण नीति :–** लार्ड लिटन ने देशी भाषाओं में छपने वाले समाचार पत्रों पर कठोर प्रतिबंध लगाये। उसने देश की संपूर्ण जनता का बल पूर्वक निःशस्त्रीकरण कर दिया। देश में भयंकर अकाल पड़ गया जिसमें लाखों व्यक्ति मर गये। लिटन ने इस ओर ध्यान नहीं दिया। जिससे जनता में भयंकर रोष पैदा हुआ।
3. **समाज सुधार आंदोलनों का प्रभाव :–** राजाराम मोहन राय ने धर्म को आधुनिक सांचे में ढ़ालकर भारतीय समाज में नव जीवन का संचार किया। स्वामी विवेकानन्द ने स्वशासन पर बल दिया। स्वामी दयानन्द ने भारत की आध्यात्मिक श्रेष्ठता सिद्ध की।

4. **भारत का आर्थिक शोषण :–** अंग्रेजों ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर प्रहार किया। भारत के परम्परागत उद्योगों तथा दस्तकारियों का अन्त कर दिया। उद्योगों के पतन के बाद श्रमिक भूखे मरने लगे।
5. **भारतीय समाचार पत्र तथा साहित्य :–** समाचार पत्रों ने जनता का ध्यान देश की दुर्दशा, अंग्रेजों के अत्याचारों तथा दमन की ओर आकर्षिक किया और अंग्रेजी सरकार की आलोचना की।
6. **देश में राजनीतिक एकता की स्थापना :–** भारत में राजनीतिक एकता की स्थापना होने के परिणामस्वरूप स्थानीय भक्ति का स्थान देश भक्ति ने ले लिया जिससे स्वतंत्रता का भाव पैदा हुआ।
7. **यातायात के साधनों की उन्नति :–** ब्रिटिश शासनकाल में रेल डाक, तार तथा सड़कों आदि की उन्नति में भी संपूर्ण देश को एक सूत्र में बांध दिया।

6 अंक

(राष्ट्रीय चेतना पर संक्षिप्त में लिखने पर 1 अंक एवं 5 बिन्दुओं पर विस्तार दिये जाने पर 5 अंक कुल 6 अंक प्राप्त होंगे)

अथवा

भारत छोड़ों आन्दोलन के कारण एवं परिणाम –

कारण –

1. **क्रिप्स मिशन से निराशा –** भारतीयों को लगने लगा कि क्रिप्स मिशन भारतीयों को धोखे में रखने के लिए एक नई चाल चली गई थी। इससे भारतीय असंतुष्ट थे।
2. **शोषण और अत्याचार –** ब्रिटिश शासन के अधीन भारतीय सदैव अत्याचार और शोषण के शिकार हुए, फलतः वे आन्दोलन करने के लिए विवश हुए।
3. **वर्मा ने भारतीयों पर अत्याचार –** वर्मा में भारतय सैनिकों के साथ किए गए दुर्व्यवहार से भारतीयों के मन में आंदोलन करने की तीव्र भावना जागृत हुई।
4. **जापानी आक्रमण का भय –** द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान जापान की सेनाएं रंगून तक पहुंच चुकी थी। लगता था कि वे भारत पर भी आक्रमण करेंगी।

परिणाम –

1. इस आंदोलन ने ब्रिटिश सरकार को भारतीय जनजागरण की शक्ति का आभास दिया।
2. इस आंदोलन ने अन्तर्राष्ट्रीय जनमत को इंग्लैण्ड के विरूद्ध जागृत किया।
3. यह आन्दोलन आम जनता का आन्दोलन था। इसमें जमींदार, युवा, महजूद किसान और महिलाओं ने बढ़चढ़ कर भाग लिया।
4. इस आंदोलन ने भारतीयों के लिए पूर्ण स्वतंत्रता की भूमिका तैयार कर दी।

(उपरोक्तानुसार वर्णन को लिखे जाने पर 3+3=6 अंक प्राप्त होंगे)

– – – – –